RNI No.RAJHIN/2012/44901

Postal Reg. No. जयपुर सिटी/403-2024-26

निवेश पत्रिका

निवेश करें लगातार, सपने करें साकार

वर्ष : 14 | अंक 5 | www.mftoday.com | हिन्दी मासिक | जयपुर, 1 नवम्बर 2025 | कुल पृष्ठ : 8 | मूल्य : 10 रुपए | email : Services@mftoday.com

सिर्फ बचत नहीं, पूँजी निर्माण का साधन हैं इक्विटी म्यूचुअल फंड्स

महंगाई हर दौर में आम आदमी के जीवन पर सीधा असर डालती है। पेट्रोल, खाद्य सामग्री, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी बुनियादी ज़रूरतों की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं। ऐसी स्थिति में सामान्य बचत खाते या पारंपरिक निवेश साधन महंगाई की गति के साथ कदम नहीं मिला पाते। यही वह जगह है जहाँ इक्विटी म्यूचुअल फंड्स एक मज़बूत विकल्प बनकर सामने आते हैं।

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स की भूमिका

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स निवेशकों के धन को अलग-अलग कंपनियों के शेयरों में लगाते हैं। जब कंपनियों का प्रदर्शन अच्छा रहता है, तो उनके शेयरों की कीमत बढ़ती है और उसके साथ ही निवेशक की पूँजी भी बढ़ती है। यह वृद्धि अक्सर महंगाई की दर से अधिक होती है, जिससे निवेशक को वास्तविक लाभ मिलता है।

महंगाई से सुरक्षा का सरल उपाय

महंगाई दर 5 या 6 प्रतिशत तक पहुँचने पर आम निवेश योजनाओं से मिलने वाला ब्याज उस पर भारी नहीं पड़ता। जबकि इक्विटी म्यूचुअल फंड्स लंबे समय में 10 से 12 प्रतिशत तक प्रतिफल देने की क्षमता रखते हैं। इस प्रकार, इन फंड्स से प्राप्त आय महंगाई के असर को संतुलित करती है और निवेशक की वास्तविक संपत्ति बढ़ाती है।

दीर्घकालिक दृष्टिकोण का महत्व

इक्विटी बाज़ार में उतार-चढ़ाव आना स्वाभाविक है, परंतु इन फंड्स की असली ताकत लंबे समय के निवेश में झलकती है। दस या पंद्रह वर्षों तक निवेशित रहने पर पूँजी का मूल्य कई गुना बढ़ सकता है। यही कारण है कि विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि निवेशक इन फंड्स को अल्पकालिक मुनाफे के बजाय दीर्घकालिक लक्ष्य से जोड़ें।

नियमित निवेश से बने संतुलन

हर महीने एक निश्चित राशि निवेश करने की आदत, यानी व्यवस्थित निवेश योजना, निवेशक को अनुशासित रखती है। इससे बाज़ार में होने वाले उतार-चढ़ाव का औसत प्रभाव कम होता है और दीर्घकाल में निवेश का मूल्य बढ़ता है। यह तरीका महंगाई से बचाव के साथ-साथ धन निर्माण का मार्ग भी बनाता है।

सही फंड चयन की समझ

हर निवेशक की वित्तीय स्थिति, जोखिम सहने की क्षमता और लक्ष्य अलग होते हैं। इसलिए, फंड का चुनाव सोच-समझकर करना ज़रूरी है। संतुलित इक्विटी फंड्स उन लोगों के लिए बेहतर हैं जो स्थिरता और वृद्धि दोनों चाहते हैं। महंगाई को पूरी तरह रोकना संभव नहीं है, लेकिन उससे आगे निकलना समझदारी से किया जा सकता है। इक्विटी म्यूचुअल फंड्स न केवल निवेशक को बढ़ती कीमतों के दबाव से राहत देते हैं बल्कि लंबे समय में आर्थिक स्वतंत्रता का आधार भी बनते हैं। आज लिया गया सही निवेश निर्णय आने वाले कल की आर्थिक स्थिरता और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

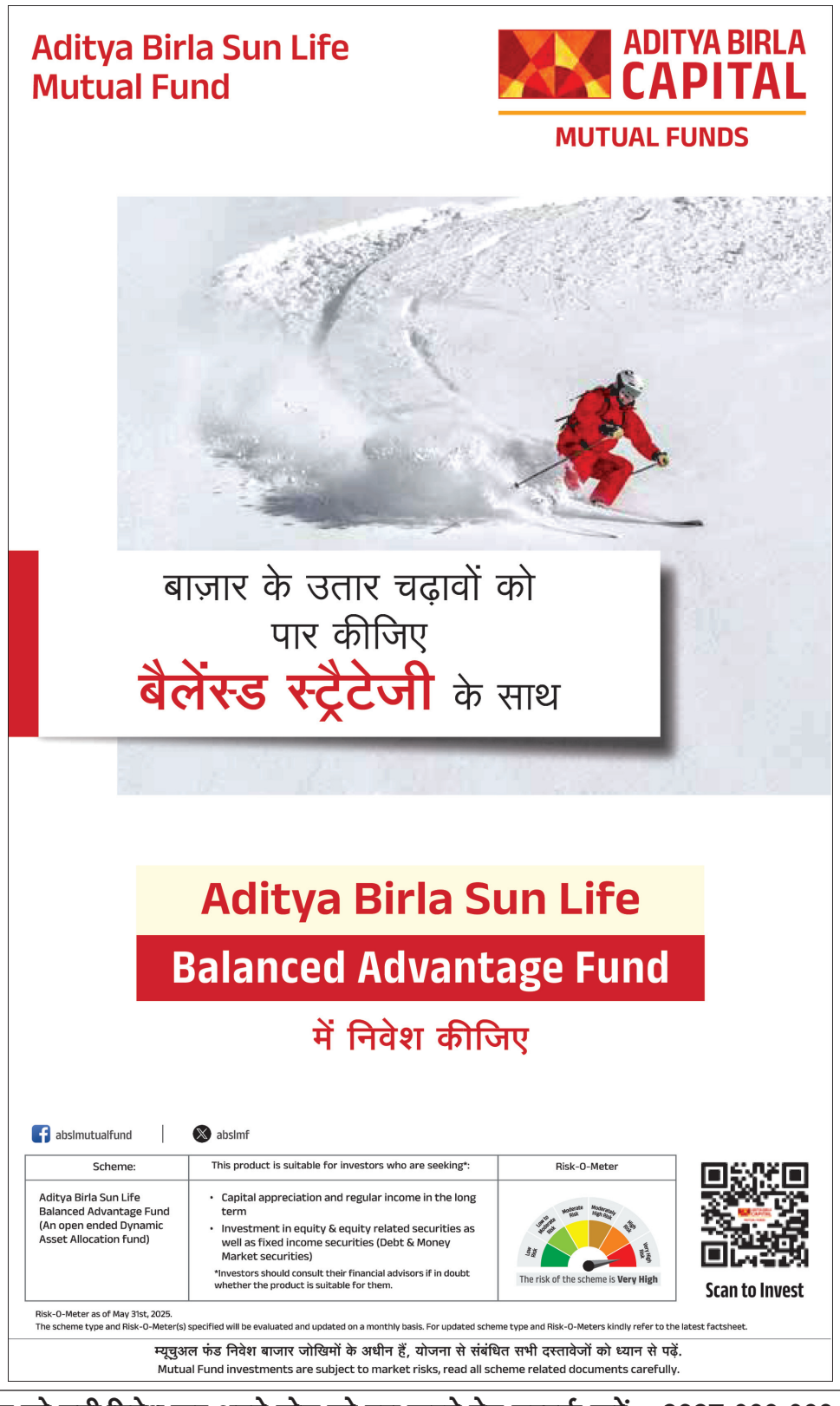

इनसाईड स्टोरी

2

शेयर बाजार में सही समय पर निवेश की चुनौती...

3

'बचत को दें प्राथमिकता आज की जरूरत, कल की सुरक्षा'...

4

SIP में रेगुलर इन्वेस्टमेंट से कम होगा रिस्क...

5

निवेश के अनगिनत रास्तों में सही दिशा दिखाता है वित्तीय सलाहकार...

6

निवेशित फंडों की समय-समय पर समीक्षा भी है जरूरी...

7

'म्यूचुअल फंड' के साथ आज ही करें बच्चों के भविष्य की तैयारी...

8

बच्चों के लिए बीमा और निवेश दोनों क्यों हैं समान रूप से जरूरी...

अपनी बचत को सही निवेश कर अपने गोल को पूरा करने हेतु सम्पर्क करें: - 8287 099 099

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

शेयर बाजार में सही समय पर निवेश की चुनौती

हर निवेशक का अधूरा सपना

हर निवेशक का सपना होता है कि वह तब शेयर खरीदे जब उनके दाम सबसे नीचे हों और उन्हें तब बेचे जब कीमतें अपने उच्चतम स्तर पर पहुँच जाएँ। यह विचार जितना आसान सुनाई देता है, वास्तविकता में उतना ही कठिन है। बाजार की दिशा का सही अनुमान लगाना केवल समझदारी का नहीं, बल्कि धैर्य और अनुभव का भी खेल है। शेयर बाजार में रोज़ाना असंख्य उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। कभी किसी वैश्विक घटना, सरकारी नीति या आर्थिक आँकड़े के कारण बाजार गिर जाता है, तो कभी किसी सकारात्मक संकेत या कंपनी के अच्छे परिणाम से इसमें उछाल आ जाता है। ऐसे में यह तय करना कि 'सबसे निचला' या 'सबसे ऊँचा' स्तर कौन-सा है, लगभग असंभव होता है।

अक्सर निवेशक लालच और भय के चक्र में फँस जाते हैं। जब बाजार नीचे गिरता है, तो डर के कारण लोग अपने शेयर बेच देते हैं। और जब बाजार ऊपर जाता है, तो लालच के कारण अधिक निवेश कर बैठते हैं। परिणाम यह होता है कि वे स्थिर लाभ से वंचित रह जाते हैं और बार-बार नुकसान झेलते हैं।

इस स्थिति से बचने के लिए निवेशक को कुछ सरल बातों का ध्यान रखना चाहिए:

1. नियमित निवेश की आदत डालें

चाहे बाजार ऊपर हो या नीचे, हर महीने निश्चित राशि का निवेश करें। इसे अनुशासित निवेश कहा जाता है और इससे जोखिम कम होता है।

2. लंबी अवधि पर ध्यान दें

अल्पकालिक उतार-चढ़ाव से घबराने के बजाय, 5 से 10 साल की अवधि के लिए निवेश करें। अच्छे व्यवसाय समय के साथ हमेशा बढ़ते हैं।

3. अपने निवेश का लक्ष्य तय करें

निवेश करने से पहले यह स्पष्ट करें कि आप किस उद्देश्य से पैसा लगा रहे हैं – बच्चों की शिक्षा, घर खरीदना या सेवानिवृत्ति की योजना। लक्ष्य तय होने से निर्णय लेना आसान होता है।

4. धैर्य और संयम रखें

बाजार की अफवाहों या अचानक गिरावट से प्रभावित न हों। समझदार निवेशक वही है जो भावनाओं पर नियंत्रण रखता है।

लंबी अवधि में देखा गया है कि जिन लोगों ने बाजार में बने रहकर अपने निवेश को समय दिया, उन्होंने बेहतर रिटर्न कमाया। कंपनियों के मुनाफे में बढ़ोतरी के साथ उनके शेयरों का मूल्य भी बढ़ता है, और यही लाभ निवेशक तक पहुँचता है। विशेषज्ञों का मानना है कि बाजार को 'समय देना' सबसे बड़ा निवेश मंत्र है। हर बार बाजार की भविष्यवाणी करने की कोशिश करने के बजाय, नियमित निवेश और संयमित दृष्टिकोण अपनाना ज़्यादा फायदेमंद साबित होता है।

निवेश केवल आँकड़ों या विश्लेषण का नहीं, बल्कि मनोविज्ञान का भी खेल है। लालच, डर और अधीरता–ये तीन भाव निवेशक को गलत दिशा में ले जाते हैं। इसलिए निवेशक को न केवल सही रणनीति अपनानी चाहिए बल्कि मानसिक रूप से भी मजबूत रहना चाहिए।

अंत में, यह समझना जरूरी है कि शेयर बाजार में सफलता का राज़ 'सही समय' नहीं, बल्कि 'सही सोच' है। जो निवेशक समय के साथ बने रहते हैं, वही असली विजेता बनते हैं। बाजार को मात देने की कोशिश के बजाय, उसके साथ समझदारी से चलना ही दीर्घकालिक लाभ का सही तरीका है।

इन गलत फाइनेंशियल आदतों को छोड़कर आप अपनी आर्थिक स्थिति को बना सकते हैं मजबूत

वे 10 आम गलत फाइनेंशियल आदतें जो आपकी आर्थिक प्रगति में बाधा डालती हैं। इन्हें छोड़कर आप न केवल अपनी बचत बढ़ा सकेंगे, बल्कि समृद्धि और खुशहाली की ओर भी कदम बढ़ा सकेंगे। आइए, अपनी आर्थिक जिंदगी को सुधारने की ओर पहला कदम बढ़ाएं।

आमदनी से ज्यादा खर्च करना

यह सबसे बड़ी गलती है। हमेशा यह सुनिश्चित करें कि आपका मासिक खर्च आपकी आय से कम हो। एक अच्छा नियम यह है कि आप कम से कम अपनी आय का 20 प्रतिशत हिस्सा बचाएं। आपातकालीन स्थिति या आय में कमी आने पर भले ही यह मुश्किल हो, पर आपका अंतिम लक्ष्य यही होना चाहिए कि आपकी कमाई खर्च से हमेशा अधिक हो। अपनी आर्थिक क्षमता से अधिक खर्च करना एक बड़ा जोखिम है। जब तक आपकी वित्तीय स्थिति मजबूत न हो, तब तक महंगी गाड़ियां, लक्जरी घर, या महंगे ट्रैवल से बचें। अपनी जीवनशैली को अपनी आय के हिसाब से संतुलित रखें।

खर्चों का रिकॉर्ड न रखना

केवल बजट बनाना ही काफी नहीं है; आपको अपने मासिक खर्चों का हिसाब भी रखना होगा। जब आप हर खर्च का रिकॉर्ड रखते हैं, तो आपको पता चलता है कि आपका पैसा कहां जा रहा है। इससे आप अनावश्यक खर्चों की पहचान कर सकते हैं और उन्हें रोक सकते हैं।

बजट का पालन न करना

हर महीने यह तय करें कि आप कितना खर्च करेंगे और उस बजट पर टिके रहें। बजट में किराया, बिजली, भोजन, और बीमा जैसे आवश्यक खर्चों के साथ-साथ बचत और मनोरंजन के लिए भी एक हिस्सा जरूर रखें। बजट बनाना तभी सफल होता है जब आप उसका अनुशासन के साथ पालन करें।

बिलों का देर से भुगतान करना

बिलों का भुगतान देर से करने पर आपको अतिरिक्त शुल्क (लेट फीस) भरना पड़ता है, और यह आपके क्रेडिट स्कोर को भी खराब कर सकता है। जैसे क्रेडिट कार्ड सुविधा के लिए बेहतरीन है, लेकिन यदि आप बिल को समय पर और पूरा नहीं चुकाते हैं, तो यह भारी ब्याज और कर्ज का जाल बन सकता है। हमेशा कोशिश करें कि हर महीने क्रेडिट कार्ड का पूरा बकाया चुका दें ताकि आप ब्याज के बोझ से बच सकें।

व्यक्तिगत लक्ष्यों का निर्धारण न करना

वित्तीय रूप से सफल होने के लिए, आपको अपने व्यक्तिगत और वित्तीय लक्ष्यों को स्पष्ट करना होगा। चाहे वह परिवार के लिए समय निकालना हो, घर खरीदना हो, या रिटायरमेंट के लिए बचत करना हो, लक्ष्य जानकर ही आप सही दिशा में अपनी बचत और निवेश को आगे बढ़ा सकते हैं।

ज्ञान के मोती

1. बचत- खर्च करने के पश्चात जो बचे उसे बचत ना करे। बल्कि बचत करने के पश्चात जो बचे उसे ही खर्च करे।

2. खर्च- खर्च आवश्यक व दीर्घकालीन उपयोगी वस्तुओं पर ही करें। अन्यथा बिना जरूरत की चीजों पर खर्च करेंगे तो शीघ्र बेचना पड़ सकता है। या कबाड़ी को देना पड़ सकता है।

3. कमाई- वर्तमान समय में कभी भी एक अकेली आय पर निर्भर न रहे। वरन् यह जरूरी है। अपने निवेश को अपनी आय का दूसरा साधन (जरिया) बनावें ।

4. जोखिम - जीवन में हर मोड़ पर जोखिम है । अतः थोड़ा जोखिम लेना जरूरी है। क्योंकि जोखिम से रिटर्न की सम्भावना अधिक रहती है।

5. निवेश - सभी सेव को एक टोकरी में रखने से उनके खराब होने की सम्भावना अधिक रहती है। अर्थात् निवेश भी डाइवर्सिफाइड (विभिन्न सेक्टरों) में होना चाहिये।

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

'बचत को दें प्राथमिकता आज की जरूरत, कल की सुरक्षा'

वर्तमान समय में जब हर दिन महंगाई बढ़ रही है, जीवन की अनिश्चितताएं गहराती जा रही हैं और नौकरी या व्यापार में स्थिरता की गारंटी नहीं रही, तब बचत का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। बचत केवल आर्थिक समझदारी का प्रतीक नहीं, बल्कि यह व्यक्ति के आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और जीवन की स्थिरता का आधार है। बहुत से लोग यह मानते हैं कि अधिक आय होने पर ही बचत संभव है, परंतु सच्चाई यह है कि बचत एक आदत है, न कि आय पर निर्भर कोई विलासिता।

1. बचत केवल धन नहीं, सोच का परिवर्तन है

बचत करने का अर्थ केवल पैसे जमा करना नहीं है, बल्कि यह जीवन दृष्टिकोण का परिवर्तन है। जब तक व्यक्ति अपनी सोच में यह बदलाव नहीं लाता कि खर्च से पहले बचत जरूरी है, तब तक वास्तविक आर्थिक मजबूती नहीं आ सकती। अधिकांश लोग जो भी आय प्राप्त करते हैं, उसका एक बड़ा हिस्सा खर्च में चला जाता है और जो बचता है उसे बचत मान लेते हैं। किंतु वास्तविक दृष्टिकोण यह होना चाहिए कि पहले बचत करें और उसके बाद शेष धन से खर्चों का निर्धारण करें। यही अनुशासित वित्तीय व्यवहार का आरंभ है।

2. छोटी बचत, बड़ा संबल

बहुत से लोग यह सोचकर बचत से दूरी बना लेते हैं कि उनकी आय इतनी नहीं कि कुछ अलग रखा जा सके। परंतु हर बड़ा वृक्ष एक छोटे बीज से ही जन्म लेता है। यदि व्यक्ति प्रतिदिन या प्रति सप्ताह थोड़ी-थोड़ी राशि अलग रखे, तो समय के साथ यह राशि एक सशक्त आर्थिक सहारा बन जाती है। उदाहरण के तौर पर यदि कोई व्यक्ति रोज़ाना चाय या मनोरंजन पर खर्च की गई छोटी रकम को बचाए, तो वर्षभर में वह एक उपयोगी राशि जमा कर सकता है। इस प्रकार छोटी बचतें धीरे-धीरे बड़े सपनों की नींव रखती हैं।

3. अनियोजित खर्च बचत का सबसे बड़ा शत्रु

आज की उपभोक्तावादी संस्कृति में आकर्षक ऑफर, विज्ञापन और सोशल मीडिया के प्रभाव में हम अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं के बीच का फर्क भूल जाते हैं। हम अक्सर वह चीज़ें खरीद लेते हैं जिनकी वास्तविक आवश्यकता नहीं होती। यह अनियोजित खर्च हमारी बचत को खत्म कर देता है। इस प्रवृत्ति पर नियंत्रण के लिए आवश्यक है कि हर व्यक्ति अपने खर्चों का नियमित लेखा-जोखा रखे और केवल जरूरत के अनुसार ही खरीदारी करे। आत्मनियंत्रण ही बचत की सबसे बड़ी कुंजी है।

4. केवल बचत नहीं, सही निवेश भी जरूरी

सिर्फ पैसे बचाकर रखना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि समय के साथ महंगाई से धन का मूल्य घटता है। इसलिए यह आवश्यक है कि बचत को उपयुक्त स्थान पर निवेश किया जाए ताकि वह न केवल सुरक्षित रहे बल्कि बढ़े भी। इसके लिए कई विकल्प हैं जैसे बैंक जमा, डाकघर योजनाएं, स्वर्ण, पेंशन योजनाएं, सावधि जमा या शेयर बाज़ार की योजनाएं। व्यक्ति को अपनी आय, जोखिम लेने की क्षमता और भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निवेश का चयन करना चाहिए। समझदारी से किया गया निवेश भविष्य की आर्थिक सुरक्षा का सबसे मजबूत आधार बनता है।

5. आपातकालीन निधि का निर्माण

जीवन में अनिश्चितताएं कभी भी सामने आ सकती हैं। अचानक नौकरी छूटना, बीमारी, दुर्घटना या अन्य आपात स्थिति में आर्थिक संकट उत्पन्न हो सकता है। ऐसे समय में यदि व्यक्ति के पास आपातकालीन निधि होती है, तो उसे दूसरों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। विशेषज्ञों का मत है कि कम से कम छह माह का आवश्यक खर्च एक अलग निधि के रूप में रखना चाहिए। यह निधि केवल संकट के समय उपयोग की जानी चाहिए और इसे बार-बार नहीं छेड़ना चाहिए।

6. परिवार में बचत की संस्कृति विकसित करें

बचत को केवल व्यक्तिगत आदत तक सीमित नहीं रखना चाहिए। यदि परिवार के सभी सदस्य बचत के महत्व को समझें और उसका पालन करें, तो परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यंत सुदृढ़ हो जाती है। बच्चों को भी बचपन से ही यह सिखाना जरूरी है कि हर जेबखर्च का एक हिस्सा बचत के लिए अलग रखा जाए। जब घर के सभी सदस्य इस सोच को अपनाते हैं, तो बचत एक संस्कृति बन जाती है, जो पीढ़ियों तक चलती है।

7. तकनीक से बने अनुशासित बचतकर्ता

आज का युग डिजिटल युग है। बैंकिंग प्रणाली और मोबाइल एप्स ने वित्तीय प्रबंधन को बहुत आसान बना दिया है। व्यक्ति अपने खाते से स्वचालित रूप से हर माह एक निश्चित राशि बचत या निवेश योजनाओं में स्थानांतरित कर सकता है। खर्चों पर नियंत्रण रखने और बचत की प्रगति देखने के लिए कई साधन उपलब्ध हैं। यह तकनीकी सहायता बचत को नियमित और व्यवस्थित बनाए रखने में मदद करती है।

8. भविष्य की स्पष्ट योजना ही सच्ची बचत है

बचत का अर्थ केवल अनिश्चित भविष्य के लिए धन रखना नहीं, बल्कि एक निश्चित उद्देश्य के लिए तैयारी करना है। जैसे सेवानिवृत्ति के बाद की सुरक्षा, बच्चों की उच्च शिक्षा, घर का सपना या अपने व्यवसाय की शुरुआत। जब व्यक्ति यह जानता है कि उसे किस उद्देश्य के लिए बचत करनी है, तो वह अधिक अनुशासित और प्रेरित होकर इस दिशा में कदम उठाता है। उद्देश्यहीन बचत अधूरी रहती है, जबकि लक्ष्य आधारित बचत व्यक्ति को समर्पण और स्थिरता देती है।

9. ऋण से मुक्ति की दिशा में पहला कदम

जो व्यक्ति नियमित रूप से बचत करता है, उसे कठिन समय में उधार लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। ऋण से बचाव न केवल आर्थिक राहत देता है बल्कि मानसिक शांति भी प्रदान करता है। जब व्यक्ति अपने ही संसाधनों से जरूरतें पूरी कर सकता है, तो उसका आत्मविश्वास और आत्मसम्मान दोनों बढ़ते हैं। बचत व्यक्ति को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाती है और उसे कर्ज़मुक्त जीवन की ओर अग्रसर करती है।

10. बचत से जीवन में संतुलन और मानसिक शांति

आर्थिक सुरक्षा केवल धन का विषय नहीं, बल्कि मन की स्थिरता का भी प्रतीक है। जब व्यक्ति जानता है कि उसके पास भविष्य के लिए पर्याप्त संबल है, तो वह तनावमुक्त होकर निर्णय लेता है। बचत व्यक्ति को निश्चिंतता और आत्मबल प्रदान करती है। यह न केवल आर्थिक स्थिरता लाती है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक संतुलन भी बनाए रखती है।

बचत कोई कठिन कार्य नहीं, बल्कि एक सरल जीवनशैली का परिणाम है। यह हर व्यक्ति को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और स्थिर बनाती है। यदि हम बचत को अपने जीवन का हिस्सा बना लें, तो जीवन के किसी भी मोड़ पर हमें भय या असुरक्षा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

आज जब जीवन की रफ्तार तेज है और भविष्य अनिश्चित, तब बचत ही वह दीपक है जो आर्थिक अंधकार में प्रकाश फैलाता है। इसलिए आज से ही संकल्प लें कि हम अपनी आय चाहे जितनी भी हो, उसका एक हिस्सा अवश्य बचाएंगे।

क्योंकि आज की बचत ही कल की सबसे बड़ी पूंजी है, और वही हमें सुरक्षित, स्वतंत्र और संतुलित जीवन की दिशा में आगे बढ़ाएगी।

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

SIP में रेगुलर इन्वेस्टमेंट से कम होगा रिस्क फाइनेंशियल जरूरते भी पूरी होंगी

आप अपनी छोटी या औसत सैलरी से बड़ी जरूरतें पूरी नहीं कर सकते हैं। इसलिए फाइनेंशियल गोल साथ-साथ फाइनेंशियल सिक्योरिटी के लिए इन्वेस्टमेंट करना काफी आवश्यक है। सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान यानी SIP के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करना काफी आसान होता है। यह बचत और निवेश का एक बेहतरीन तरीका है। एसआईपी में इन्वेस्ट करके आप अपनी जरूरतों पूरी कर सकते है या इमरजेंसी के समय अपनों की रक्षा कर सकते है। लेकिन कई बार हमारे पास सही गाइडेंस नहीं होने की वजह से निवेश के बावजूद उसका बेहतर फायदा नहीं मिल पाता है।

1. इन्वेस्टमेंट जल्दी शुरू करें

जल्दी इन्वेस्टमेंट से मतलब है, कम उम्र में निवेश शुरू कर देना। ऐसा करके आप SIP में ज्यादा टाइम तक इन्वेस्ट कर रिटर्न के रूप में बड़ा अमाउंट पा सकते हैं। SIP में जितना दिन आपका इन्वेस्टमेंट रहेगा, आपको उतनी ही ज्यादा कंपाउंडेड रिटर्न मिलेगा। इसलिए 20 से 30 साल की उम्र के बीच इन्वेस्टमेंट शुरू कर दें।

2. रेगुलर इन्वेस्टमेंट करें

रेगुलर इन्वेस्टमेंट से एक फाइनेंशियल डिसिप्लिन मेंटेन होता है। इसका एक और फायदा है-अगर आप रेगुलर इन्वेस्टमेंट करते हैं, तो कई बार औसत लागत से ज्यादा फायदा मिल जाता है। इसका मतलब यह है कि अगर कीमतें कम होती हैं, तो आप ज्यादा यूनिट खरीदते हैं और जब कीमतें ज्यादा होती हैं तो आप कम यूनिट खरीदते हैं। इस तरह के SIP करने से शेयर बाजार में होने वाले उतार-चढ़ाव का जोखिम कम हो जाता है।

3. सही फंड का चयन करें

म्यूचुअल फंड में गोल पूरा होने पर बेहतर रिटर्न के साथ रुपये की निकासी करना बहुत ही मुश्किल हैं, इसके लिए मार्केट रिस्क फंडो की ग्रोथ और गोल के अनुसार फंडो का चयन बहुत जरुरी हैं, लेकिन मुश्किल हैं, अत: वित्तीय सलाहकार की मदद लेकर आराम से फंडो का चयन कर सकते हैं

4. अपने पोर्टफोलियो को डायवर्सिफाई करें

पोर्टफोलियो को डाइवर्स रखने से आप मार्केट के रिस्क से भी बच जाते हैं और रिटर्न भी बेहतर मिलने की संभावना बढ़ा जाती है। इसलिए इक्विटी, डेट, गोल्ड, रियल एस्टेट और दूसरे फंड में इन्वेस्ट करने की सोचें। इससे एक के प्रॉफिट से दूसरे के नुकसान की भरपाई हो जाती है।

5. समय के साथ SIP के अमाउंट बढ़ाएं

जैसे-जैसे आपकी इनकम बढ़ती जाती है, आप अपने इन्वेस्टमेंट के अमाउंट को भी बढ़ाएं। वेल्थ बढ़ाने का यह एक बेहतर तरीका है। इसलिए आप धीरे-धीरे SIP के अमाउंट को बढ़ाकर बढ़ी हुई इनकम का लाभ ले सकते हैं।

यूं समझें शेयर बाजार को

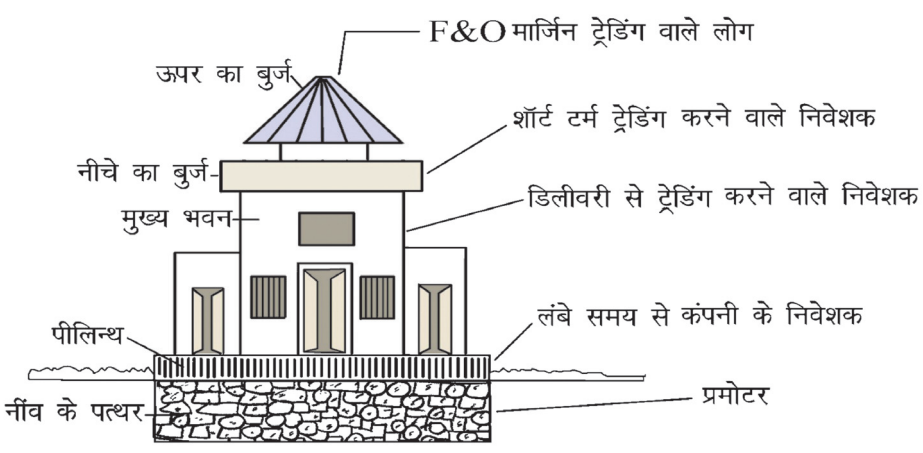

यदि आंधी या भूकंप आता है तो सबसे पहले कौन गिरता है? बुर्ज, फिर दीवारें, फिर खिड़की दरवाजे, पीलिन्थ परंतु नींव के पत्थर का कुछ नहीं बिगड़ता।

*निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

निवेश के अनगिनत रास्तों में सही दिशा दिखाता है वित्तीय सलाहकार

जब निवेश के विकल्प अनगिनत हों और हर योजना लाभ का दावा करे, तब सही निर्णय लेने में वित्तीय सलाह ही सबसे मूल्यवान पूँजी बन जाती है

आज के समय में निवेश केवल पैसे बढ़ाने का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन के हर लक्ष्य को पूरा करने का एक सशक्त साधन बन चुका है। अब बाजार में इतनी विविध योजनाएँ मौजूद हैं कि किसी आम निवेशक के लिए यह तय करना कठिन हो जाता है कि वह अपनी कमाई का कितना हिस्सा कहाँ लगाए। पहले जहाँ लोग केवल बैंक जमा या सोने में निवेश करते थे, वहीं अब म्यूचुअल फंड, बीमा योजनाएँ, शेयर बाजार, बांड और अचल संपत्ति जैसे अनेक विकल्प मौजूद हैं।

ऐसी स्थिति में सही निर्णय लेने के लिए वित्तीय सलाहकार का मार्गदर्शन लेना एक समझदारी भरा कदम माना जाता है। सलाहकार आपकी आर्थिक स्थिति, जोखिम क्षमता और भविष्य की आवश्यकताओं को समझकर निवेश की दिशा तय करने में सहायता करता है। वह आपको केवल योजनाएँ नहीं बताता, बल्कि आपकी पूरी वित्तीय यात्रा का साथी बन जाता है।

1. निवेश विकल्पों की अधिकता से बढ़ी उलझन

आज बाजार में हर संस्था अपनी अलग-अलग निवेश योजनाएँ लेकर आती है। कोई ऊँचा लाभ दिखाता है, कोई कर में राहत देने का दावा करता है। ऐसे में आम निवेशक भ्रमित हो जाता है कि कौन-सी योजना उसके लिए उपयुक्त है। वित्तीय सलाहकार इस उलझन को सुलझाने का कार्य करता है। वह आपकी उम्र, आय, पारिवारिक जिम्मेदारियों और भविष्य के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए आपके लिए उपयुक्त योजनाओं का चयन करता है। इससे अनुमान और भावनाओं के बजाय तर्क और समझ पर आधारित निवेश निर्णय लिए जाते हैं।

2. लक्ष्य आधारित निवेश से बढ़ती स्पष्टता

निवेश तभी सफल होता है जब उसके पीछे कोई स्पष्ट उद्देश्य हो। बिना लक्ष्य तय किए किया गया निवेश एक बिना दिशा वाली यात्रा जैसा होता है। एक अनुभवी वित्तीय सलाहकार आपकी प्राथमिकताओं को समझकर अल्पकालिक, मध्यमकालिक और दीर्घकालिक लक्ष्यों के अनुसार निवेश योजना तैयार करता है। यदि आप घर खरीदने की सोच रहे हैं, बच्चों की शिक्षा के लिए पूँजी जुटाना चाहते हैं या सेवानिवृत्ति के बाद नियमित आय चाहते हैं – हर उद्देश्य के लिए वह अलग रणनीति बनाता है। इस तरह निवेश में स्पष्टता और दिशा दोनों आती हैं।

3. जोखिम और स्थिरता का सही संतुलन

हर निवेश में कुछ जोखिम अवश्य होता है, लेकिन हर व्यक्ति की जोखिम उठाने की क्षमता अलग होती है। कोई अधिक जोखिम लेकर ऊँचा लाभ चाहता है, तो कोई स्थिरता को प्राथमिकता देता है। वित्तीय सलाहकार आपकी जोखिम सहनशीलता को समझकर ऐसा संतुलन बनाता है जिसमें सुरक्षा और वृद्धि दोनों बनी रहें। वह न तो पूरी पूँजी को जोखिम में डालने की सलाह देता है, न ही इतनी सतर्कता बरतने को कहता है कि लाभ के अवसर ही खो जाएँ। यही संतुलन लंबे समय में स्थिर और सशक्त निवेश का आधार बनता है।

4. कर योजना और बचत का संतुलित संयोजन

अक्सर लोग वर्ष के अंत में कर बचाने के लिए जल्दबाजी में निवेश कर देते हैं। इस जल्दबाजी में वे ऐसी योजनाएँ चुन लेते हैं जो न तो कर बचत में पूरी मदद करती हैं और न ही पर्याप्त लाभ देती हैं। एक योग्य वित्तीय सलाहकार पूरे वर्ष के लिए कर योजना बनाता है। वह आपकी आय और कर स्थिति का विश्लेषण कर ऐसे विकल्प सुझाता है जहाँ कर बचत के साथ-साथ दीर्घकालिक लाभ भी मिल सके। इस तरह निवेश केवल कर से राहत का साधन नहीं, बल्कि पूँजी निर्माण का अवसर बन जाता है।

5. निवेश की नियमित समीक्षा से बनी रहती है प्रगति

बाजार की स्थितियाँ बदलती रहती हैं – कभी ब्याज दरें ऊपर जाती हैं, कभी आर्थिक माहौल बदलता है। ऐसे में निवेश की समय-समय पर समीक्षा आवश्यक है। वित्तीय सलाहकार आपके निवेश पोर्टफोलियो का आकलन करते हैं, कमजोर योजनाओं को पहचानते हैं और उन्हें बेहतर विकल्पों से बदलने की सलाह देते हैं। इस नियमित समीक्षा से आपका निवेश समय के साथ परिपक्व और अधिक लाभदायक बनता है।

6. भावनात्मक निर्णयों से बचाव

शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले लोग अक्सर डर और लालच के बीच फँस जाते हैं। जब बाजार गिरता है तो डर के कारण निवेश निकाल लेते हैं, और जब बाजार चढ़ता है तो लालच में अधिक निवेश कर बैठते हैं। यह च नुकसानदायक साबित होता है। वित्तीय सलाहकार इस भावनात्मक प्रवृत्ति को नियंत्रित करने में मदद करता है। वह निवेशक को यह समझाता है कि बाजार के उतार-चढ़ाव अस्थायी हैं और लंबे समय तक बने रहने से ही वास्तविक लाभ मिलता है।

7. परिवार की वित्तीय सुरक्षा और भविष्य की तैयारी

हर व्यक्ति का सपना होता है कि उसका परिवार आर्थिक रूप से सुरक्षित रहे और जीवन की ज़रूरतों के लिए पर्याप्त संसाधन हों। वित्तीय सलाहकार आपकी आय, खर्च और जिम्मेदारियों को देखते हुए एक संतुलित योजना बनाता है। इसमें बच्चों की शिक्षा, विवाह, माता-पिता की स्वास्थ्य देखभाल और सेवानिवृत्ति जैसी जरूरतों के लिए व्यवस्थित निवेश शामिल होता है। इससे भविष्य की अनिश्चितताओं के बावजूद आर्थिक स्थिरता बनी रहती है।

8. ज्ञान और अनुभव से बढ़ता भरोसा

वित्तीय सलाहकार केवल सलाह देने वाला नहीं, बल्कि ज्ञान और अनुभव का स्रोत होता है। वह बाजार की बदलती स्थितियों को समझता है और उसके अनुरूप निवेश रणनीति तैयार करता है। कई बार निवेशक स्वयं जानकारी के अभाव में गलत निर्णय ले लेते हैं, लेकिन सलाहकार अपनी विशेषज्ञता के बल पर सही रास्ता दिखाता है। उसका अनुभव वर्षों की बाजार समझ से बना होता है, जो आम निवेशक के लिए एक अमूल्य संपत्ति है।

निवेश का संसार आज अवसरों से भरा है, परंतु अवसरों के बीच सही चुनाव करना सबसे कठिन कार्य है। वित्तीय सलाहकार वह दिशा-दर्शक दीपक है जो इस अनिश्चितता के अंधकार में रास्ता दिखाता है। वह केवल आपकी पूँजी नहीं बढ़ाता, बल्कि आपकी आर्थिक सोच को भी परिपक्व बनाता है।

यदि आप चाहते हैं कि आपकी मेहनत की कमाई सुरक्षित रहे, बढ़े और आपके जीवन के लक्ष्यों को पूरा करे, तो किसी अनुभवी वित्तीय सलाहकार की सलाह लेना न केवल विवेकपूर्ण बल्कि आवश्यक कदम है। क्योंकि निवेश में सफलता का रहस्य केवल पैसा लगाना नहीं, बल्कि समझदारी से सही दिशा चुनना है – और यह समझ एक अच्छे सलाहकार के मार्गदर्शन से ही आती है।

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

निवेशित फंडों की समय-समय पर समीक्षा भी है जरूरी

आमतौर पर निवेशक किसी भी फंड में निवेश करते समय उसका पिछला प्रदर्शन किस फंड ने एक या दो साल की अवधि में सबसे ज्यादा रिर्टन दिया आदि बातों पर गौर करता है। उपरोक्त विकल्पों की भांति ही म्यूचुअल फंडो में निवेश की एक खास नीति निवेश के उद्देश्यों और निवेशक की जोखिम उठाने की क्षमता पर भी निर्भर करती है। बेहतर प्रदर्शन करने वाले फंड, निवेशक की जरूरतों के अनुरुप हो यह जरुरी नहीं है। यदि कोई निवेशक म्यूचुअल फंड में निवेश करने की योजना बना रहा है तो उसे किसी भी फंड के निवेश उद्देश्यों को पढकर पहले यह देखना चाहिए कि क्या फंड का निवेश उद्देश्य उनकी जरुरतों को पूरा कर पायेगा। साथ ही यह भी जरुरी नहीं है कि सर्वश्रेष्ठ प्रर्दशन करने वाले इक्विटी डाइवर्सिफाइड फंड ही उपयुक्त हो, निवेशक को भविष्य के आर्थिक लक्ष्यों, निवेश की अवधि, जोखिम उठाने की क्षमता, बाजार के विभिन्न चक्रों में बढिया प्रदर्शन करने वाले फंडो का चुनाव करना चहिए।

निवेशक ने अपनी जरुरतों और मानदडों के अनुरुप किसी फंड में निवेश किया है तो उसे उसके प्रबन्धक और प्रदर्शन दोनो पर निगाह रखनी चाहिए। शेयर या बॉन्ड की भांति म्यूचुअल फंडो में किए गए निवेश की समीक्षा बार-बार करने की जरुरत नहीं होती। अगर आपने किसी खास उद्देश्य और जोखिम उठाने की क्षमता को ध्यान में रखते हुए निवेश किया है तो इसकी समीक्षा साल में एक बार करना ठीक रहता है। अगर किसी

निवेशक ने एसइआईपी (सिप) के जरिए निवेश कर रखा है तो उसे कम से कम तीन या पांच साल बाद निवेश की समीक्षा करनी चाहिए। लेकिन सिप की शुरुआत लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए परिसंपत्ति आवंटन की नीति को अपनाते हुए की जाने चाहिए।

अगर निवेशक अपनी निवेश योजना में बदलाव करते है तो उनको फंड से बाहर निकलना पड सकता है उदाहरण के लिए उम्र के बढने के साथ-साथ इक्विटी योजना से बाहर निकल कर ऋण योजनाओ में निवेश की जरुरत हो सकती है या फंड का प्रबन्धक बदलता है और फंड में बदलाव देखने को मिलता अर्थात् फंड के खराब प्रदर्शन पर योजना से बाहर निकलने की जरुरत पड सकती है। कभी कभार फंड अपने निवेश उद्देश्यों में बदलाव करते है, तो आपका निवेश उद्देश्य प्रभावित हो सकता है ऐसी परिस्थिति में आप को दूसरे फंड में निवेश की आवश्यकता हो सकती है।

आपने जिन फंडो में निवेश किया है अगर उनका प्रदर्शन उसी के बराबरी के फंडो की तुलना में लगातार खराब रहता है तो निवेशित फंड से निकासी की सोचिए, हो सकता है कि फंड प्रबन्धक अन्य प्रबन्धक कम्पनियों के फंड प्रबन्धक की तुलना में कम सक्षम हो।

एक ही क्षेत्र में निवेश किए जाने वाले फंडों में जोखिम अधिक होता है। हो सकता है कि कभी वैश्विक परिस्थितियों या सरकार की नीतियों के अनुकूल होने की वजह से किसी खास समयावधि के दौरान इनका प्रर्दशन जबरदस्त हो लेकिन परिस्थितियों और विभिन्न देशों की नीतियां प्रतिकूल होने पर इनमें भारी गिरावट भी आ सकती है। ऐसे फंडो में निवेश करने से पहले किसी वित्तीय सलाहकार की उचित सलाह ले लेनी चाहिए। सेक्टोरल फंडों (सेक्टोरेल) में निवेश पोर्टफोर्लियों का अधिकतम 5 से 7 प्रतिशत तक ही किया जा सकता है। वह भी डाइवसिर्फिकेशन के लिए। कोर पोर्टफोर्लियों में ऐसे फंडो की जगह नहीं दी जाती चाहिए। डाइवसिर्फिकेशन के लिए चार से पांच फंडों में निवेश करना उचित है। चाहे निवेशित राशि एक लाख हो या एक करोड। इससे ज्यादा फंडो में निवेश करने पर कभी-कभी एक ही तरफ के दो फंडो में निवेश हो जाता है। फंडों की संख्या कम हो तो उसे ट्रेक करने और उनकी समीक्षा करने में आसानी रहती है। पोर्टफोलियों में एक ही तरह की दो फंडो को जगह न देकर बहेतर प्रदर्शन करने वाले फंडो को रखते हुए शेष को निकाल दे। नए फंडो में निवेश के पहले निवेशक को चाहिए कि वह उस फंड की जोखिम प्रबन्धक की प्रणाली, प्रबन्धक तथा एडमिनिस्ट्रेशन के नजरियों से फंड का मूल्याकन करें। तभी फंड में निवेश करें।

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

'म्यूचुअल फंड' के साथ आज ही करें बच्चों के भविष्य की तैयारी

हर माता-पिता का सपना होता है कि उनके बच्चे जीवन में किसी कमी का सामना न करें। वे अपने बच्चों को हर सुख देना चाहते हैं, अच्छी शिक्षा, सुरक्षित जीवन और आत्मनिर्भर भविष्य। लेकिन बदलते समय में केवल प्रेम और परवरिश ही पर्याप्त नहीं। अब ज़रूरत है सोच-समझकर आर्थिक तैयारी करने की, ताकि आने वाला कल बच्चों के लिए चिंतामुक्त हो। आज का युग बचत का नहीं, योजनाबद्ध निवेश का है। बच्चों के सपनों को साकार करने के लिए म्यूचुअल फंड एक ऐसा साधन है जो सुरक्षित, लचीला और समय के साथ बढ़ने वाला विकल्प बन चुका है।

1. भविष्य की तैयारी आज से शुरू करें

बच्चों के बड़े होने के साथ उनकी जरूरतें भी बढ़ती हैं – शिक्षा, करियर, विवाह या जीवन की शुरुआती ज़िम्मेदारियाँ। यदि माता-पिता पहले से तैयारी करें, तो इन लक्ष्यों को पूरा करने में किसी प्रकार की आर्थिक रुकावट नहीं आती। म्यूचुअल फंड की खूबी यही है कि यह लंबी अवधि में धन को स्थिर और मजबूत बनाता है। जल्दी शुरुआत करने पर छोटी राशि भी भविष्य में बड़ी पूंजी का रूप ले सकती है।

2. म्यूचुअल फंडः समझदारी और सुविधा का संगम

म्यूचुअल फंड एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें कई निवेशकों का धन विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न योजनाओं में लगाया जाता है। इससे निवेशक को अलग-अलग क्षेत्रों में हिस्सा मिलता है, जिससे जोखिम कम और लाभ की संभावना अधिक रहती है। बच्चों के भविष्य के लिए यह इसलिए उपयुक्त है क्योंकि इसमें छोटी रकम से शुरुआत की जा सकती है और समय के साथ इसे बढ़ाया भी जा सकता है।

3. छोटी रकम से बड़ी सुरक्षा का निर्माण

हर अभिभावक यह सोचता है कि बचत के लिए बड़ी राशि चाहिए, जबकि सच्चाई यह है कि म्यूचुअल फंड में हर माह थोड़ी-थोड़ी रकम लगाकर भी बड़ा लक्ष्य पूरा किया जा सकता है। यदि बच्चे के जन्म से ही माता-पिता नियमित निवेश करें, तो उसके युवा होने तक पर्याप्त राशि तैयार की जा सकती है। यही धन आगे चलकर उसकी शिक्षा या करियर की पहली सीढ़ी बन सकता है।

4. समय और चक्रवृद्धि का जादू

म्यूचुअल फंड का सबसे बड़ा लाभ समय और चक्रवृद्धि की शक्ति है। जितना अधिक समय धन को बढ़ने का अवसर मिलता है, उतनी ही तेजी से पूंजी बढ़ती है। बच्चों के लिए यह सबसे लाभकारी स्थिति होती है, क्योंकि उनका निवेश काल लंबा होता है। यही लंबा समय छोटे निवेश को बड़ी पूंजी में बदल देता है।

5. जोखिम और स्थिरता का संतुलन

बच्चों के भविष्य के लिए निवेश करते समय सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण होती है। म्यूचुअल फंड में यह सुविधा है कि निवेशक अपनी आवश्यकता और जोखिम लेने की क्षमता के अनुसार योजना चुन सकता है। जो माता-पिता जोखिम नहीं लेना चाहते, वे संतुलित या स्थिर योजनाओं में निवेश कर सकते हैं। इस प्रकार धीरे-धीरे धन बढ़ता है और सुरक्षा भी बनी रहती है।

6. शिक्षा के खर्च के लिए सबसे उपयोगी साधन

आज शिक्षा का खर्च लगातार बढ़ रहा है। उच्च शिक्षा या विदेश में पढ़ाई के लिए लाखों रुपये की आवश्यकता होती है। म्यूचुअल फंड में की गई दीर्घकालिक योजना इस खर्च को आसानी से पूरा कर सकती है। इससे अभिभावक पर तत्काल आर्थिक दबाव नहीं आता और बच्चे अपने सपनों की दिशा में निश्चिंत होकर आगे बढ़ सकते हैं।

7. बच्चों के नाम पर निवेश प्रेम का सच्चा उपहार

माता-पिता अक्सर बच्चों को खिलौने, कपड़े या कीमती वस्तुएँ उपहार में देते हैं। परंतु सबसे सुंदर उपहार वह होता है जो उनके भविष्य को सुरक्षित करे। बच्चों के नाम पर म्यूचुअल फंड में निवेश करना केवल आर्थिक योजना नहीं, बल्कि प्रेम का ऐसा भावनात्मक वचन है जो आने वाले वर्षों में उन्हें आत्मनिर्भर बनाता है।

8. निवेश के माध्यम से सिखाएं जिम्मेदारी

जब बच्चे बड़े होते हैं, तो उन्हें बताना चाहिए कि उनके लिए नियमित रूप से निवेश किया गया है। इससे उनमें वित्तीय अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना आती है। वे समझते हैं कि हर सपना मेहनत और योजना से पूरा होता है। यह सीख उन्हें जीवनभर काम आती है।

9. अनुशासन ही सफलता की कुंजी

निवेश का असली रहस्य निरंतरता है। चाहे बाजार ऊपर हो या नीचे, यदि हर माह नियमित निवेश जारी रखा जाए, तो लंबी अवधि में उसका लाभ अवश्य मिलता है। यह अनुशासन बच्चों के भविष्य को स्थिर बनाता है और माता-पिता को आर्थिक आत्मविश्वास देता है।

10. म्यूचुअल फंड : हर सपने के साथ कदम से कदम मिलाकर

म्यूचुअल फंड निवेश की वह राह है जो धीरे-धीरे परंतु स्थिर गति से बढ़ती है। इसमें न तो तुरंत अमीरी का भ्रम है, न अस्थिरता का डर। यह जीवन की तरह ही चलता है - छोटे कदमों से बड़े परिणामों की ओर। यही कारण है कि यह बच्चों के लिए सबसे विश्वसनीय आर्थिक साथी माना जाता है। बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करना केवल जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हर माता-पिता की जीवन यात्रा का सबसे बड़ा उद्देश्य है। म्यूचुअल फंड इस यात्रा का साथी बन सकता है – सरल, लचीला और समय के साथ बढ़ने वाला। आज से शुरुआत कीजिए। चाहे राशि छोटी हो या बड़ी, नियमित निवेश करें और अपने बच्चों के सपनों को एक मजबूत आर्थिक पंख दीजिए।

डिस्क्लेमर

निवेश पत्रिका में प्रकाशित लेखों के माध्यम से बाजारों एवं कॉरपोरेट जगत के घटनाक्रमों की निष्पक्ष तस्वीर पेश करने का प्रयास किया गया है। निवेश पत्रिका के नियंत्रण एवं जानकारी से परे परिस्थितियों के कारण वास्तविक घटनाक्रम भिन्न हो सकते है। निवेश पत्रिका में प्रकाशित रिपोर्टों के आधार पर पाठकों द्वारा किए जाने वाले निवेश और लिए जाने वाले करोबारी निर्णयों के लिए निवेश पत्रिका कोई जिम्मेदारी नहीं लेता है। पाठकों से स्वयं निर्णय लेने की अपेक्षा की जाती है।

- संपादकः रमेशचन्द मालू

Invest in Tax Saving (ELSS) Schemes, and 54 EC Bonds

Invest for 80C ELSS (Start SIP From Today), Capital Gain 54EC Bonds.

Invest With Better Mutul Fund Distributor Having Experience of 32 Years

Mob.: 98290-06801/98290-99899/98290-40424

बच्चों की शादी व पढ़ाई हेतु शीघ्र निर्णय लें

एक वर्ष का बच्चा होते ही अगर 100 रु. प्रति दिन निवेश करें तो 15 वर्ष बाद (बच्चें की उम्र 16 वर्ष होने पर) पायें रु. 15 लाख लगभग।

और यदि यही निर्णय पांच वर्ष बाद लेते हैं 100 रू. प्रति दिन 10 वर्ष बाद (बच्चें की उम्र 16 वर्ष होने पर) पायें रु. 7 लाख लगभग।

गणना मात्र 12% ब्याज प्रतिवर्ष चक्रवृद्धि दर सें की गई है....

बच्चों के लिए बीमा और निवेश दोनों क्यों हैं समान रूप से जरूरी

हर माता-पिता की सबसे बड़ी इच्छा होती है कि उनका बच्चा सुरक्षित और खुशहाल जीवन जिए। इसके लिए वे शिक्षा, स्वास्थ्य और भविष्य की योजनाओं को लेकर चिंतित रहते हैं। लेकिन सिर्फ कमाना और खर्च करना काफी नहीं है, क्योंकि जीवन अनिश्चितताओं से भरा है। इसलिए बच्चों के लिए बीमा और निवेश दोनों ही जरूरी हैं। दोनों के संतुलन से ही बच्चों के जीवन की आर्थिक नींव मजबूत बनती है।

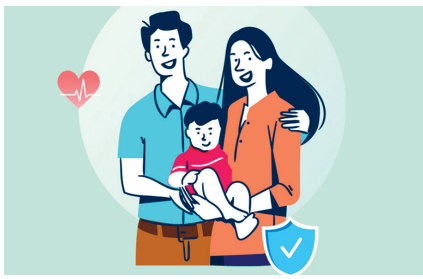

1. बीमा से सुरक्षा की गारंटी: जीवन बीमा बच्चों के भविष्य की सुरक्षा का सबसे पहला कदम है। यह माता-पिता की अनुपस्थिति में बच्चे की शिक्षा और आवश्यकताओं को सुरक्षित रखता है। अगर परिवार का मुख्य कमाने वाला सदस्य किसी कारण से साथ न रहे, तो बीमा योजना बच्चे की पढ़ाई और जरूरतों को पूरा करने में मदद करती है।

2. निवेश से भविष्य की तैयारी: बीमा के साथ निवेश की योजना बच्चों के लंबे भविष्य को मजबूत करती है। चाहे बात उच्च शिक्षा की हो या शादी की, समय पर शुरू किया गया निवेश बड़ा सहारा बन सकता है। म्यूचुअल फंड, सिप या चाइल्ड प्लान जैसे निवेश विकल्प बच्चों के लिए पूंजी निर्माण में मदद करते हैं।

3. महंगाई से सुरक्षा का कवच: महंगाई लगातार बढ़ रही है और शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी ज़रूरतें भी महंगी होती जा रही हैं। केवल बचत से काम नहीं चलेगा। निवेश ही ऐसा माध्यम है जो महंगाई से आगे बढ़कर धन को वास्तविक रूप से बढ़ाता है। वहीं बीमा यह सुनिश्चित करता है कि किसी भी संकट में बच्चे की जरूरतें प्रभावित न हों।

4. बीमा और निवेश का संयोजन सबसे प्रभावी: अगर दोनों को साथ जोड़ा जाए तो सुरक्षा और विकास दोनों संभव हैं। उदाहरण के लिए, बीमा कवर के साथ निवेश आधारित योजनाएं (जैसे चाइल्ड इंश्योरेंस प्लान) एक ही समय में जोखिम कवर और पूंजी वृद्धि दोनों देती हैं। इससे माता-पिता को मानसिक शांति और बच्चे को भविष्य की सुरक्षा मिलती है।

5. अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना: नियमित प्रीमियम या निवेश किश्तें भरने से माता-पिता में अनुशासन आता है और बच्चों में आर्थिक जिम्मेदारी की समझ विकसित होती है।

6. आपातकालीन स्थितियों में संबल: जीवन अनिश्चित है। बीमारी, दुर्घटना या किसी अन्य आकस्मिक घटना के समय बीमा परिवार को आर्थिक झटके से बचाता है। वहीं निवेश से बनी पूंजी ऐसे समय में राहत का सहारा बन सकती है।

7. छोटे कदम, बड़ा भविष्य: कम राशि से शुरू किए गए निवेश भी लंबे समय में बड़ा फंड बना सकते हैं। बच्चों की पढ़ाई या करियर के लिए बड़े खर्चों का सामना बिना बोझ के किया जा सकता है। बीमा के साथ यह योजना और भी सुदृढ़ हो जाती है।

बच्चों का भविष्य सिर्फ सपनों पर नहीं, बल्कि मजबूत वित्तीय योजनाओं पर टिका होता है। बीमा सुरक्षा देता है और निवेश सपनों को पूरा करने की ताकत। इसलिए जरूरी है कि दोनों को एक साथ अपनाया जाए। आज उठाया गया समझदारी भरा कदम आने वाले कल में बच्चों के लिए आर्थिक आज़ादी और स्थिरता का आधार बनेगा – यही माता-पिता का सबसे बड़ा उपहार होगा।

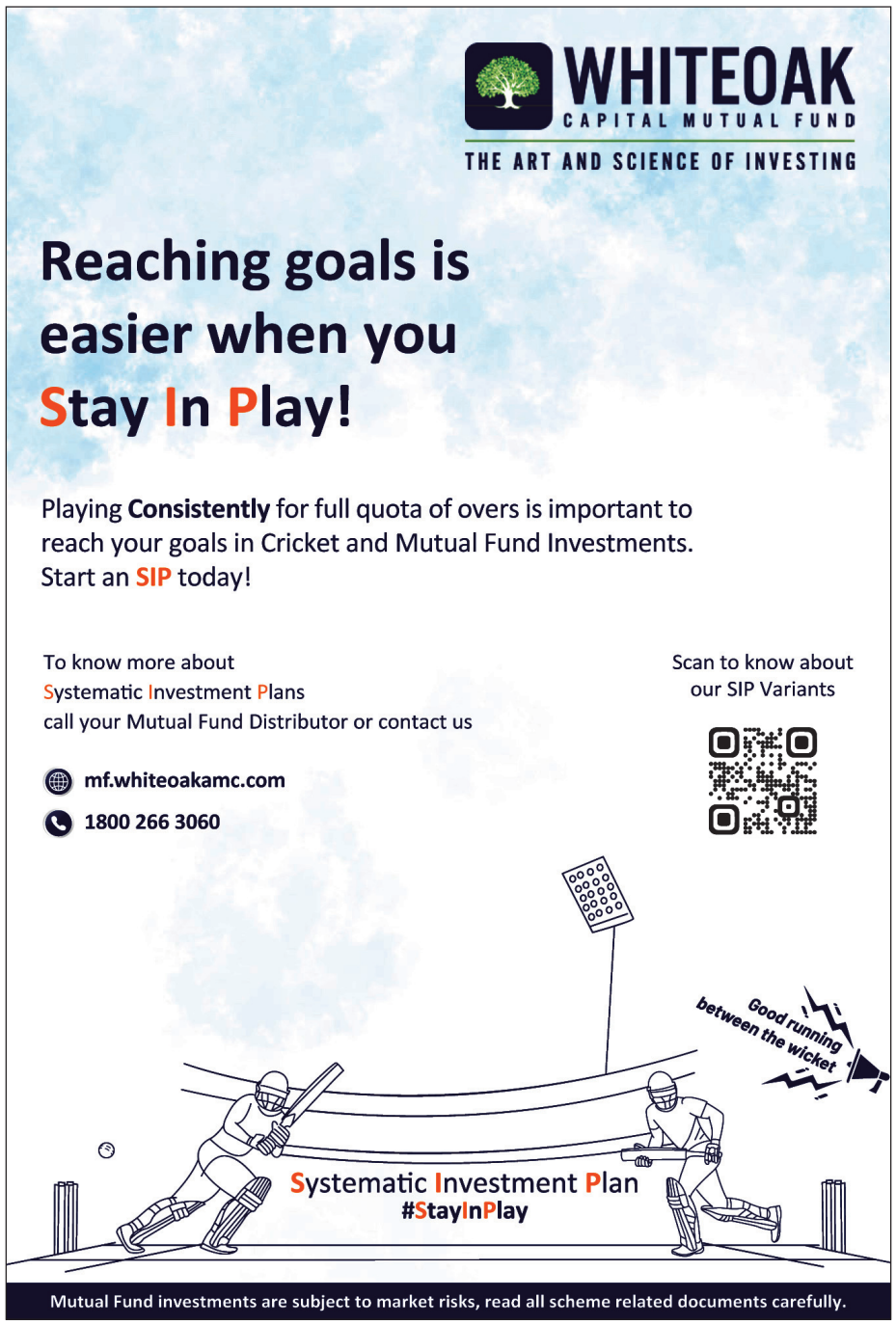

अगर आप आज से ही ₹ 10000 महीने की SIP चालू करते है तो बन सकते है ₹ 1.5 करोड़

SIP RETURNS

₹ 5000 Invested Monthly				
YEARS	AMOUNT INVESTED	RETURNS		
		10%	12%	15%
5	300000	387185	408348	442873
10	600000	1024225	1150193	1376085
20	1200000	3796844	4946277	7486197

₹ 10000 Invested Monthly				
YEARS	AMOUNT INVESTED	RETURNS		
		10%	12%	15%
5	600000	774371	816697	885745
10	1200000	2048450	2300387	2752171
20	2400000	7593688	9892554	14972395

₹ 20000 Invested Monthly				
YEARS	AMOUNT INVESTED	RETURNS		
		10%	12%	15%
5	1200000	1548741	1633393	1771490
10	2400000	4096900	4600774	5504341
20	4800000	15187377	19785107	29944790

₹ 50000 Invested Monthly				
YEARS	AMOUNT INVESTED	RETURNS		
		10%	12%	15%
5	3000000	3871854	4083483	4428725
10	6000000	10242249	11501934	13760853
20	12000000	37968442	49462768	74861974

Call us to invest: 82870 99099 or mail us: info@mftoday.com

#Mutual fund investment are subject to market risk, read all scheme related document carefully

स्वतत्वाधिकारी, प्रकाशक व मुद्रक रमेश चन्द मालू द्वारा मोहन शर्मा एण्ड कंपनी प्रा.लि.ए-10, सुदर्शनपुरा औद्योगिक क्षेत्र जयपुर से मुद्रित एवं 103 प्रथम मंजिल, बृज अनुकम्पा, बीएसएनएल के सामने, अशोक मार्ग, सी-स्कीम जयपुर-302001 से प्रकाशित। सम्पादक : रमेश चन्द मालू मो. 98290-40524, 98290-66601
ई-मेल : niveshpatrika@mftoday.com वेबसाईट: www.mftoday.com